डॉ. बिभा कुमारी,

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला, विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, पत्र – आठ

काव्य – प्रयोजन

सुप्रसिद्ध उक्ति है –

“प्रयोजनमनुछिश्य मंदोपि न प्रवर्तते।”

अर्थात बिना प्रयोजन के तो साधारण व्यक्ति भी कार्य – प्रवृत्त नहीं होता है, तो फिर कवि के काव्य का उद्देश्य होना तो अवश्यम्भावी है। संस्कृत के आचार्यों के कथन पर गौर करें तो भरत ने काव्य अथवा नाटक के छह प्रयोजन बताए हैं – धर्म, यश, आयु, हित, ज्ञानवृद्धि तथा उपदेश।

“धर्म यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धि विवर्धनम्।

लौकोपदेशजननम् नाट्यमेतद् भविष्यति।।”

भामह काव्य के चार प्रयोजन मानते हैं –

पुरुषार्थ चतुष्टय में रुचि, कलाओं में निपुणता, यश का विस्तार तथा आनंद की प्राप्ति।

-“धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।

प्रीति करोति कीर्ति च साधुकाव्य निषेवणम्।।”

दण्डी ने काव्य को ज्ञान का प्रकाशक और यश का विस्तारक कहते हुए प्रकारांतर से काव्य के यही दो प्रयोजन स्वीकार किए हैं।

आचार्य रुद्रट ने काव्य का उद्देश्य इष्ट अर्थात धन, यश, सुख – लाभ तथा अनिष्ट अर्थात विनाश माना है –

(क) “यो यस्य यशः तनुते तेन कथं तस्य नो प्रवृतभ।”

(ख) “अर्थ मनर्थोपशमं शमसगमथवा मतं यदेवास्य।

विरचित रुचिरसरतुरतिअखिलं लभते तदेव कवि:।।”

आनंदवर्धन ने सहृदय के हृदय को आनंद प्रदान करना ही काव्य का उद्देश्य माना है –

“तेन ब्रूम: सहृदय मनः प्रीतये तत्स्वरूपम्।”

अभिनवगुप्त ने आनंदोपलब्धि को ही काव्य का एकमात्र उद्देश्य स्वीकार किया है। राजशेखर ने कवि के लिए कीर्ति और सहृदय के लिए प्रीति को भी काव्य का प्रयोजन स्वीकार किया है।

कुंतक काव्य के तीन प्रयोजन मानते हैं –
सुगमता से चतुर्वर्ग फल प्राप्ति, व्यवहार ज्ञान तथा विलक्षण चमत्कार की अनुभूति।
मम्मटाचार्य पूर्ववर्ती विद्वानों के प्रयोजनों का सुंदर समन्वय करते हुए कहते हैं कि कवि के लिए काव्य का प्रयोजन यश तथा धन की प्राप्ति, व्यवहार ज्ञान तथा दुःखनाश है। सामाजिक के लिए कांतासम्मित उपदेश है। कवि और सामाजिक दोनों के लिए काव्य का प्रमुख प्रयोजन परमानंद की प्राप्ति है।
कविराज विश्वनाथ काव्य का प्रयोजन बताते हुए कहते हैं कि इससे अल्पबुद्धि वालों को भी सुखपूर्वक चतुर्वर्ग फल की प्राप्ति हो जाती है।
हिंदी के रीतिकालीन आचार्यों पर मम्मट का ही प्रभाव दिखाई पड़ता है।
आधुनिक काल में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि कवि धर्म संस्थापनार्थ उत्पन्न होते हैं।"
आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार –
"शील, शक्ति और सौंदर्य का व्यंजक काव्य ही आदर्श है।"
मैथिली शरण गुप्त ने उपदेश और मनोरंजन को काव्य – प्रयोजन माना है। -
"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।"
निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि काव्य का प्रयोजन आत्महित और लोकहित है।